بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in
02.12.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय ख़लीफ़ा-ए-राशिद सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 2 दिसम्बर 2022, स्थान मस्जिद मुबारक

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्ह के सद्गुण एवं विशेषताएँ बयान हो रहो थीं। इस विषय में लोगों में सर्वाधिक प्रिय होने के बारे में एक रिवायत है- हज़रत इब्ने उमर रज़ी. बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौर में हम लोगों में से एक को दूसरे से उत्तम कहते थे, अर्थात मुक़ाबला हुआ करता था। हम समझते थे कि हज़रत अबू बकर रज़ी. सबसे उत्तम हैं फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ी. तथा फिर हज़रत उसमान रज़ी. उत्तम हैं। एक अवसर पर हज़रत उमर रज़ी. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. से कहा कि ऐ लोगो, मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद सबसे उत्तम हूँ इस पर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने तुरन्त फ़रमाया कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि सूरज नहीं निकला किसी आदमी पर जो उमर से अच्छा हो।

हज़रत सलमान रज़ी., हज़रत सुहेब रज़ी. तथा हज़रत बिलाला रज़ी. लोगों के बीच बैठे हुए थे कि अबू सुफ़यान आए, इस पर उन लोगों ने कहा कि अल्लाह की क़सम! अल्लाह की तलवारों ने अल्लाह के दुश्मन की गर्दन के साथ अभी तक अपना बदला चुकता नहीं किया। यह सुन कर हज़रत अब् बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि क्या तुम लोग क़ुरैश के सरदारों के बारे में इस तरह कह रहे हो। फिर आप रज़ी. स्वयं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अबू बकर! तुमने सम्भवतः सलमान, सुहेब तथा बिलाल इत्यादि को नाराज़ कर दिया है, तथा यदि तुमने ऐसा कर दिया है तो तुमने अपने रब को नाराज़ कर दिया। यह सुन कर हज़रत अबू बकर रज़ी. उन तीनों लोगों के पास आए तथा कहा कि प्यारे भाईयो! क्या मैंने आप लोगों को नाराज़ कर दिया है। इस पर उन लोगों ने कहा कि नहीं, ऐसी बात नहीं। यहाँ यह भी साबित होता है कि हज़रत अबू बकर रज़ी. की विनयता कितनी अधिक थी। ऐसे लोग कि जिनको आपने ग़ुलामी

से आज़ाद भी करवाया हुआ है, इसके बावजूद उनके पास आते हैं तथा उनसे क्षमा मांगते हैं और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञा पालन तथा मुहब्बत का क्या स्तर था कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह बात फ़रमाई कि तुमने नाराज़ कर दिया, यह नहीं फ़रमाया कि जाकर माफ़ी मांगो, परन्तु आप स्वयं गए और उनसे क्षमा मांगी।

हज़रत मसीह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. के सद्गुण तथा विशेषताओं में से एक विशिष्ट बात यह भी है कि हिजरत की यात्रा में आप रज़ी. को संगत के लिए विशिष्ट किया गया तथा प्राणियों में से सर्वश्रेष्ट पुरुष की कठिनाईयों में आप रज़ी. उनके साथ थे और आप रज़ी. जटिलताओं के आरम्भ से ही हुज़ूर स. के विशेष मित्र बनाए गए थे ताकि महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आपका विशेष सम्बंध साबित हो और उसमें यह भेद था कि अल्लाह तआला को यह भली भांति ज्ञात था कि सिददीक़े अकबर सहाबियों में से सर्वाधिक शूर वीर, मुत्तक़ी तथा सबसे बढ़ कर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे तथा शौर्य पुरुष थे और यह कि सय्यदुल कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम में लीन थे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने हज़रत अबू बकर रज़ी. के विषय में वर्तमान युग के कुछ लेखकों के संदर्भ पेश करके फ़रमाया कि चूँकि ये लोग (यूरुप क इतिहासकार) आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस उच्च एवं उत्तम नबुव्वत के स्तर का ज्ञान एवं विवेक नहीं रखते थे इस लिए हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. इत्यादि की प्रशंसा को अति सीमा तक बढ़ा चढ़ा कर बयान करने से काम ले जाते हैं कि किसी अवस्था में उचित नहीं हो सकता। जबकि हज़रत अबू बकर रज़ी. हों अथवा हज़रत उमर रज़ी. ये सब अपने आक़ा व अनुसरण योग्य हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्पूर्ण वफ़ादार थे। ये लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए सेवक के रूप में हाथ और पाँव के समान थे।

हज़रत अबू बकर रज़ी. के सुन्दर आचरण के विषय में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि क्या यह सच नहीं कि बड़े बड़े महान राजा अबू बकर तथा उमर बल्कि अबू हुरैरा का नाम लेकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु कहते रहे हैं और चाहते रहे हैं कि काश उनकी सेवा का ही हमें अवसर मिलता। फिर कौन है जो कह सके कि अबू बकर और उमर और अबू हुरैरा रज़ीयल्लाहु अन्हुम ने निर्धनता का जीवन व्यतीत करके कुछ अहितकारी काम किया। निःसन्देह उन्होंने सांसारिक दृष्टि से अपने ऊपर एक मौत स्वीकार कर ली किन्तु वह मौत उनके लिए जीवन साबित हुई तथा अब कोई शक्ति उनको मार नहीं सकती, वे क़यामत तक जीवित रहेंगे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. आगे फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. को देखो, आप रज़ी. मक्का के एक छोटे से व्यापारी थे, यदि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवतरित न होते तथा मक्का का इतिहास लिखा जाता तो इतिहासकार केवल इतना वर्णन करता कि अबू बकर अरब का एक सज्जन एवं ईमानदार व्यापारी था। किन्तु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्पूर्ण

आज्ञा पालन के कारण अबू बकर रज़ी. को वह स्तर मिला, तो आज पूरी दुनिया आदर पूर्वक उनका नाम लेती है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं- इस्लाम की सेवा तथा दीन के लिए बलिदान करने के कारण आज हज़रत अबू बकर रज़ी. को जो उच्च स्तर प्राप्त है वह क्या दुनिया के बड़े बड़े राजाओं को भी मिला है? आज दुनिया के बादशाहों में से कोई एक भी नहीं जिसे इतनी महानता प्राप्त हो जितनी हज़रत अबू बकर रज़ी. को मिली है बल्कि हज़रत अबू बकर रज़ी. तो अलग रहे किसी बड़े से बड़े बादशाह को भी इतना सम्मान प्राप्त नहीं जितनी मुसलमानों की दृष्टि में हज़रत अबू बकर रज़ी. के सेवकों को मिला हुआ है बल्कि सत्य यह है कि हमें हज़रत अबू बकर रज़ी. का कुत्ता भी बड़े बड़े सम्मनित लोगों से अच्छा लगता है, इस लिए क्यूँकि वह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चौखट का सेवादार हो गया, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चौखट का ग़ुलाम हो गया तो उसकी हर चीज़ हमें प्यारी लगने लग गई और अब यह सम्भव ही नहीं कि कोई व्यक्ति इस महानता को हमारे दिलों से मिटा सके।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. के एक बेटे जो देर के बाद इस्लाम में दाख़िल हुए थे, एक बार रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मस्जिद में बैठे थे, विभिन्न बातें हो रही थीं, यूँ बातों बातों में हज़रत अबू बकर रज़ो. से कहने लगे- अब्बा जान! अमुक युद्ध के अवसर पर मैं एक पत्थर के पीछे छुपा हुआ था, आप मेरे सामने से दो बार निकले, मैं यदि चाहता तो आपको मार देता। परन्तु मैंने इस विचार से हाथ न उठाया कि आप मेरे बाप हैं। अबू बकर रज़ी. यह सन कर बोले कि मैंने तुझे उस समय देखा नहीं, यदि मैं तुझे देख लेता तो चूँकि तू ख़ुदा का दुश्मन होकर मैदान में आया था इस लिए मैं तुझे अवश्य मार देता।

हज़रत अबू बकर रज़ी. के शुभ शिष्टाचार के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं- अबू बकर रज़ी. वह था जिसकी प्रकृति में सज्जनता का तेल एवं बत्ती पहले से उलब्ध थी इस लिए रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र शिक्षा ने इसको तुरन्त प्रभावित करके रौशन कर दिया। उसने आप स. से कोई वाद विवाद नहों किया, कोई निशान एवं चमत्कार नहीं मांगा, साथ ही सुन कर इतना ही पूछा कि क्या आप नबुव्वत का दावा करते हैं? जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- हाँ, तो बोल उठे कि आप स. गवाह रहें, मैं सबसे पहले ईमान लाता हूँ। यह प्रयोग किया गया है कि सवाल करने वाले बहुत कम हिदायत पाते हैं, हाँ अच्छी धारणा तथा धैर्य से काम लेने वाले हिदायत से पूर्ण रूप से लाभान्वित होते हैं। इसका नमूना हज़रत अबू बकर रज़ी. और अबू जहल दोनों में मौजूद है। अबू बकर रज़ी. ने झगड़ा न किया और निशान न मांगे, परन्तु उसको वह दिया गया जो निशान मांगने वालों को न मिला। उसने निशान पर निशान देखे तथा स्वयं एक महानतम निशान बना। अबू जहल ने मतभेद किया तथा विरोध एवं मूर्खता से बाज़ न आया, उसने निशान पर निशान देखे, परन्तु देख न सका। अंततः स्वयं दूसरों के लिए निशान होकर विरोध की आग में ही नष्ट हुआ।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि मेरे रब ने मुझ पर प्रकट किया कि सिद्दीक़ और फ़ारूक़ और उसमान रज़ीयल्लाहु तआला अन्हुम दिव्य पुरुष एवं मोमिन थे और उन लोगों में से थे जिन्हें अल्लाह ने चुन लिया था और जो ख़दाए रहमान की अनुकम्पा के पात्र बने थे तथा अधिकांश अल्लाह के निकटतम पहुंचने वालों ने उनके सद्गुणों की गवाही दी। उन्होंने अनन्त एवं असीम ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए अपनी बस्तियाँ छोड़ीं, हर एक युद्ध की भट्टी में दाख़िल हुए तथा गर्मी के मौसम में दोपहर की गर्मी एवं सर्दियों की रातों में ठंडक की चिंता नहीं को बल्कि नवयुवकों की भांति दीन के मार्गों पर चलते रहे, अपने सतमार्ग पर सहजता के साथ चलते रहे तथा अपनों एवं ग़ैरों की ओर न झुके और अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए सब कुछ छोड़ दिया, उनके कर्मों में महक तथा उनकी गतिविधियों में सुगन्ध है तथा यह सब कुछ उनके स्तर के अनुसार बाग़ एवं नेकियों के उद्यानों की ओर मार्ग दर्शन करता है तथा उनकी दिव्य वायु अपने सुगन्धित झोंको से उनके भेद का पता देती है तथा उनके प्रकाश अपनी सम्पूर्ण ज्योति के साथ हम पर प्रकट होते हैं।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि बख़ुदा! अल्लाह तआला ने शेख़ैन अर्थात अबू बकर एवं उमर तथा तीसरे जो ज़ुन्नूरैन (हज़रत उसमान रज़ी.) हैं, हर एक को इस्लाम के द्वार तथा ख़ैरुलअनाम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेना के हरावल दस्ते (आगे चलने वाला सैन्य दल) बनाया। अतः जो व्यक्ति उनकी महानता का इंकार करता है तथा उनके सुदृढ़ अस्तित्व के प्रमाण को तुच्छ मानता है और उनके साथ आदर पूर्वक पेश नहीं आता बल्कि उनका अपमान करता है और उन्हें बुरा भला कहने को तत्पर रहता है तथा अपशब्दों का उपयोग करता है मुझे उसके बुरे परिणाम तथा ईमान नष्ट हो जाने का भय है।

आप अलै. फ़रमाते हैं- सच तो यह है कि अबू बकर सिद्दीक़ और उमर फ़ारूक़ दोनों महान सहाबियों में स थे, इन दोनों ने दूसरों का हक़ देने में कभी कोताही नहीं की, उन्होंने अपने तक़्वा को अपना सद्मार्ग तथा न्याय को अपना उद्देश्य बना लिया। उन दोनों की सच्चाई एवं निष्ठा की क्या बुलन्द शान है। दोनों ऐसे मुबारक मदफ़न (शवों को दफ़न करने का स्थान) में दफ़न हुए कि यदि मूसा और ईसा जीवित होते तो सैकड़ों गुना सौभाग्य वहां दफ़न होने की अभिलाषा में करते।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि कुछ भाग, कुछ हवाले और हैं जो इन्शाअल्लाह आगे पेश होंगे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131